Pro

Chapter 26

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

כָּבוֹד׃	לִכְסִיל	נָאוֶה	לֹא־	כֵּן	בַּקָּצִיר	וְכַמָּטָר	בַּקַּיִץ	וְכַשֶּׁלֶג		1
आदर।	मूर्ख-को	शोभित	नहीं-	वैसे	कटनी-में	और-जैसे-वर्षा	गर्मी-में	जैसे-हिम		
H3519	H3684	H5000	H3808			H4306	H7019	H7950		

जैसे असंभव है बर्फ का गर्मी में पड़ना और जैसे वांछित नहीं है कटनी के वक्त पर वर्षा का आना वैसे ही मूर्ख को मान देना अर्थहीन है।

תָּבֹא׃	)לוֹ(	[לֹא]	חִנָּם	קְלָלַת	כֵּן	לָעוּף	כִּדְרוֹר	לָנוּד	כִּצִפּוֹר	2
आता।	(उसे)	[नहीं]	व्यर्थ-का	शाप	वैसे	उड़ती	जैसे-अबाबील	भटकती	जैसे-चिड़िया	
H0935		H3808	H2600	H7045			H1866	H5110	H6833	

यदि तूने किसी का कुछ भी बिगाड़ा नहीं और तुझको वह शाप दे, तो वह शाप व्यर्थ ही रहेगा। उसका शाप पूर्ण वचन तेरे ऊपर से यूँ उड़ निकल जायेगा जैसे चंचल चिड़िया जो टिककर नहीं बैठती।

כְּסִילִים׃	לְגֵו	וְשֵׁבֶט	לַחֲמוֹר	מֶתֶג	לֶסוּס	שׁוֹט	3
मूर्खों-की।	पीठ-के-लिए	और-छड़ी	गधे-के-लिए	लगाम	घोड़े-के-लिए	कोड़ा	
H3684		H7626	H2543	H4964		H7752	

घोड़े को चाबुक सधाना पड़ता है। और खच्चर को लगाम से। ऐसे ही तुम मूर्ख को डंडे से सधाओ।

אָתָּה׃	גַּם־	לוֹ	תִּשְׁוֶה־	פֶּן־	כְּאִוַּלְתּוֹ	כְסִיל	תַּעַן	אַל־	4
तू।	भी-	उसके	तू-बराबर-हो-जाए-	कहीं-	उसकी-मूर्खता-के-अनुसार	मूर्ख-को	उत्तर-दे	मत-	
	H1571			H6435	H0200	H3684		H0408	

मूर्ख को उत्तर मत दो नहीं तो तुम भी स्वयं मूर्ख से दिखोगे। मूर्ख की मूर्खता का तुम उचित उत्तर दो, नहीं तो वह अपनी ही आँखों में बुद्धिमान बन बैठेगा।

בְּעֵינָיו׃	חָכָם	יִהְיֶה	פֶּן־	כְּאִוַּלְתּוֹ	כְּסִיל	עֲנֵה	5
अपनी-नज़रों-में।	बुद्धिमान	वह-हो-जाए	कहीं-	उसकी-मूर्खता-के-अनुसार	मूर्ख-को	उत्तर-दे	
	H2450	H1961	H6435	H0200	H3684		

मूर्ख को उत्तर मत दो नहीं तो तुम भी स्वयं मूर्ख से दिखोगे। मूर्ख की मूर्खता का तुम उचित उत्तर दो, नहीं तो वह अपनी ही आँखों में बुद्धिमान बन बैठेगा।

כְּסִיל׃	בְּיַד־	דְּבָרִים	שֹׁלֵחַ	שֹׁתֶה	חָמָס	רַגְלַיִם	מְקַצֵּה	6
मूर्ख-के।	हाथ-में-	सन्देश	भेजता	पीता	हिंसा	पैर	काटता	
H3684	H3027	H1697	H7971	H8354	H2555	H7272	H7096	

मूर्ख के हाथों सन्देशा भेजना वैसा ही होता है जैसे अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारना, या विपत्तिको बुलाना।

כְּסִילִים׃	בְּפִי	וּמָשָׁל	מִפְסָחַ	שֹׁקִים	דַּלְיוּ	7
मूर्खों-के।	मुँह-में	और-दृष्टान्त	लँगड़े-की	टाँगें	लटकती	
H3684	H6310	H4912	H6455	H7785	H1809	

बिना समझी युक्ति किसी मूर्ख के मुख पर ऐसी लगती है, जैसे किसी लंगड़े की लटकती मरी टाँग।

כָּבוֹד׃	לִכְסִיל	נוֹתֵן	כֵּן־	בְּמַרְגֻּמָה	אֶבֶן	כִּצְרוֹר	8
आदर।	मूर्ख-को	देता	वैसा-	गोफ़न-में	पत्थर	जैसे-बाँधना	
H3519	H3684	H5414		H4773	H0068		

मूर्ख को मान देना वैसा ही होता है जैसे कोई गुलेल में पत्थर रखना।

כְּסִילִים׃	בְּפִי	וּמָשָׁל	שִׁכּוֹר	בְּיַד־	עָלָה	חוֹחַ	9
मूर्खों-के।	मुँह-में	और-दृष्टान्त	पियक्कड़-के	हाथ-में-	चढ़ता	काँटा	
H3684	H6310	H4912	H7910	H3027	H5927	H2336	

मूर्ख के मुख में सूक्ति ऐसे होती है जैसे शराबी के हाथ में काँटेदार झाड़ी हो।

עֹבְרִים׃	וְשֹׂכֵר	כְּסִיל	וְשֹׂכֵר	כֹּל	מְחוֹלֵל־	רַב	10
राहगीरों-को।	और-भाड़े-पर-रखता	मूर्ख-को	और-भाड़े-पर-रखता	सब-का	जन्म-देने-वाला-	महान	
		H3684		H3605			

किसी मूर्ख को या किसी अनजाने व्यक्ति को काम पर लगाना खतरनाक हो सकता है। तुम नहीं जानते कि किसे दुःख पहुँचेगा।

בְאִוַּלְתּוֹ׃	שׁוֹנֶה	כְּסִיל	קֵאוֹ	עַל־	שָׁב	כְּכֶלֶב	11
अपनी-मूर्खता-में।	दोहराता	मूर्ख	वमन-पर	अपनी-	लौटता	जैसे-कुत्ता	
H0200		H3684			H7725	H3611	

जैसे कोई कुत्ता कुछ खा करके बीमार हो जाता है और उल्टी करके फिर उसको खाता है वैसे ही मूर्ख अपनी मूर्खता बार—बार दोहराता है।

מִמֶּנּוּ׃	לִכְסִיל	תִּקְוָה	בְּעֵינָיו	חָכָם	אִישׁ	רָאִיתָ	12
उससे।	मूर्ख-के-लिए	आशा	अपनी-नज़रों-में	बुद्धिमान	मनुष्य	देखता-है-तू	
	H3684			H2450	H0376	H7200	

वह मनुष्य जो अपने को बुद्धिमान मानता है, किन्तु होता नहीं है वह तो किसी मूर्ख से भी बुरा होता है।

הָרְחֹבוֹת׃	בֵּין	אֲרִי	בַּדָּרֶךְ	שַׁחַל	עָצֵל	אָמַר	13
चौकों-के।	बीच-में	सिंह	मार्ग-में	जवान-शेर	आलसी	कहता	
H7339	H0996		H1870	H7826	H6102	H0559	

आलसी करता रहता है, काम नहीं करने के बहाने कभी वह कहता है सड़क पर सिंह है।

מִטָּתוֹ׃	עַל־	וְעָצֵל	צִירָהּ	עַל־	תִּסּוֹב	הַדֶּלֶת	14
बिस्तर-पर।	अपने-	और-आलसी	कब्ज़े-पर	अपने-	घूमता	दरवाज़ा	
H4296		H6102			H5437		

जैसे अपनी चूल पर चलता रहता किवाड़। वैसे ही आलसी बिस्तर पर अपने ही करवटें बदलता है।

פִּיו׃	אֶל־	לַהֲשִׁיבָהּ	נִלְאָה	בַּצַּלַּחַת	יָדוֹ	עָצֵל	טָמַן	15
मुँह-तक।	अपने-	लौटाने-में	थक-जाता	थाली-में	हाथ-अपना	आलसी	छिपाता	
H6310	H0413	H7725	H3811	H6747	H3027	H6102	H2934	

आलसी अपना हाथ थाली में डालता है किन्तु उसका आलस, उसके अपने ही मुँह तक उसे भोजन नहीं लाने देता।

טָעַם׃	מְשִׁיבֵי	מִשִּׁבְעָה	בְּעֵינָיו	עָצֵל	חָכָם	16
समझ-के।	उत्तर-देने-वालों	सात-से	अपनी-नज़रों-में	आलसी	बुद्धिमान	
H2940	H7725	H7651		H6102	H2450	

आलसी मनुष्य, निज को मानता महाबुद्धिमान! सातों ज्ञानी पुरुषों से भी बुद्धिमान।

לוֹ׃	לֹּא־	רִיב	עַל־	מִתְעַבֵּר	עֹבֵר	כָלֶב	בְאָזְנֵי־	מַחֲזִיק	17
उसका।	जो-नहीं-	झगड़े	पर-	क्रोधित-होता	गुज़रने-वाला	कुत्ते-के	कान-	पकड़ता	
	H3808	H7379				H3611	H0241	H2388	

ऐसे पथिक जो दूसरों के झगड़े में टाँग अड़ाता है जैसे कुत्ते पर काबू पाने के लिये कोई उसके कान पकड़े।

וָמָוֶת׃	חִצִּים	זִקִּים	הַיֹּרֶה	כְּמִתְלַהְלֵהַּ	18
और-मृत्यु।	तीर	अंगारे	फेंकने-वाला	जैसा-पागल	
H4194	H2671				

उस उन्मादी सा जो मशाल उछालता है या मनुष्य जो घातक तीर फेकता है वैसे ही वह भी होता है जो अपने पड़ोसी छलता है और कहता है—मैं तो बस यूँ ही मजाक कर रहा था।

אָנִי׃	מְשַׂחֵק	הֲלֹא־	וְאָמַר	רֵעֵהוּ	אֶת־	רִמָּה	אִישׁ	כֵּן־	19
मैं?	मज़ाक-करता	क्या-नहीं-	और-कहता	अपने-मित्र	को-	धोखा-देता	मनुष्य	वैसा-	
H0589	H7832	H3808	H0559	H7453	H0853		H0376		

उस उन्मादी सा जो मशाल उछालता है या मनुष्य जो घातक तीर फेकता है वैसे ही वह भी होता है जो अपने पड़ोसी छलता है और कहता है—मैं तो बस यूँ ही मजाक कर रहा था।

20

בְּאֶ֣פֶס	עֵ֭צִים	תִּֽכְבֶּה־	אֵ֑שׁ	וּבְאֵ֥ין	נִ֝רְגָּ֗ן	יִשְׁתֹּ֥ק	מָדֽוֹן׃
बिना–	लकड़ियों	बुझ–जाती–	आग	और–बिना–	कानाफूसी–करने–वाले	शान्त–होता	झगड़ा।
	H6086	H3518	H0784	H0369	H5372	H8367	H4066

> जैसे इन्धन बिना आग बुझ जाती है वैसे ही कानाफूसी बिना झगड़े मिट जाते हैं।

21

פֶּחָ֣ם	לְ֭גֶחָלִים	וְעֵצִ֣ים	לְאֵ֑שׁ	וְאִ֥ישׁ	[מדונים]	(מִ֝דְיָנִ֗ים)	לְחַרְחַר־	רִֽיב׃
कोयला	अंगारों–के–लिए	और–लकड़ियाँ	आग–के–लिए	और–मनुष्य	[झगड़ालू]	(झगड़ालू)	भड़काने–के–लिए–	विवाद।
H6352	H1513	H6086	H0784	H0376	H4066	H4066	H2787	H7379

פ

> कोयला अंगारों को और आग की लपट को लकड़ी जैसे भड़काती है, वैसे ही झगड़ीलू झगड़ों को भड़काता।

22

דִּבְרֵ֣י	נִ֭רְגָּן	כְּמִתְלַהֲמִ֑ים	וְ֝הֵ֗ם	יָרְד֥וּ	חַדְרֵי־	בָֽטֶן׃
वचन	कानाफूसी–करने–वाले–के	जैसे–स्वादिष्ट–भोजन	और–वे	उतरते	कोठरियों–में–	पेट–की।
H1697	H5372	H3859	H1992	H3381	H2315	H0990

> जन प्रवाद भोजन से स्वादिष्ट लगते हैं। वे मनुष्य के भीतर उतरते चले जाते हैं।

23

כֶּ֣סֶף	סִ֭יגִים	מְצֻפֶּ֣ה	עַל־	חָ֑רֶשׂ	שְׂפָתַ֥יִם	דֹּלְקִ֗ים	וְלֶב־	רָֽע׃
चाँदी	मैल–की	चढ़ी–हुई	पर–	मिट्टी–के–बर्तन	होंठ	जलते–हुए	और–हृदय–	दुष्ट।
H3701	H5509	H6823		H2789	H8193	H1814		

> दुष्ट मन वाले की चिकनी चुपड़ी बातें होती है ऐसी, जैसे माटी के बर्तन पर चिपके चाँदी के वर्क।

24

[בשפתו]	(בִּשְׂפָתָ֗יו)	יִנָּכֵ֥ר	שׂוֹנֵ֑א	וּ֝בְקִרְבּ֗וֹ	יָשִׁ֥ית	מִרְמָֽה׃
[अपने–होंठों–से]	(अपने–होंठों–से)	छिपाता	बैरी	और–भीतर	रखता	छल।
H8193	H8193		H8130	H7130	H7896	H4820

> द्वेषपूर्ण व्यक्ति अपने मधुर वाणी में द्वेष को ढकता है। किन्तु अपने हृदय में वह छल को पालता है।

25

כִּֽי־	יְחַנֵּ֣ן	ק֭וֹלוֹ	אַל־	תַּאֲמֶן־	בּ֑וֹ	כִּ֤י	שֶׁ֖בַע	תּוֹעֵב֣וֹת	בְּלִבּֽוֹ׃
जब–	मधुर–करे	आवाज़–अपनी	मत–	विश्वास–कर–	उस–पर	क्योंकि	सात	घृणित–बातें	उसके–हृदय–में।
			H0408	H0539			H7651	H8441	

> उसकी मोहक वाणी से उसका भरोसा मत कर, क्योंकि उसके मन में सात घृणित बातें भरी हैं।

26

תִּכַּסֶּ֣ה	שִׂ֭נְאָה	בְּמַשָּׁא֑וֹן	תִּגָּלֶ֖ה	רָעָת֣וֹ	בְקָהָֽל׃
ढकी–होती	घृणा	छल–से	प्रकट–होगी	उसकी–बुराई	सभा–में।
H3680	H8135	H4860	H1540		H6951

> छल से किसी का दुर्भाव चाहे छुप जाये किन्तु उसकी दुष्टता सभा के बीच उघड़ेगी।

27

כֹּֽרֶה־	שַּׁ֭חַת	בָּ֣הּ	יִפֹּ֑ל	וְגֹ֥לֵל	אֶ֝֗בֶן	אֵלָ֥יו	תָּשֽׁוּב׃
खोदने–वाला–	गड्ढा	उस–में	गिरता	और–लुढ़काने–वाला	पत्थर	उसी–पर	लौटता।
	H7845		H5307	H1556	H0068	H0413	H7725

> यदि कोई गढ़ा खोदता है किसी के लिये तो वह स्वयं ही उसमें गिरेगा; यदि कोई व्यक्ति कोई पत्थर लुढ़काता है तो वह लुढ़क कर उसी पर पड़ेगा।

28

לְֽשׁוֹן־	שֶׁ֭קֶר	יִשְׂנָ֣א	דַכָּ֑יו	וּפֶ֥ה	חָ֝לָ֗ק	יַעֲשֶׂ֥ה	מִדְחֶֽה׃
जीभ–	झूठी	घृणा–करती	अपने–कुचले–हुओं–से	और–मुँह	चिकना	करता	विनाश।
H3956	H8267	H8130	H1790	H6310	H2509		H4072

> ऐसा व्यक्ति जो झूठ बोलता है, उनसे घृणा करता है जिनको हानि पहुँचाता और चापलूस स्वयं का नाश करता।